Que. छायावादी विशेषताओं के सन्दर्भ में राम की शक्तिपूजा की समीक्षा करें —

राम की शक्ति पूजा : छायावादी विशेषताएँ

निराला छायावाद के प्रतिनिधि कवि हैं। राम की शक्तिपूजा की रचना 1936 ई० में हुई जब छायावाद का प्रगतिवाद में पर्यवसान हो रहा था। यह स्वाभाविक है कि इसमें छायावाद की कई विशेषताएँ दिखाई दें। किन्तु, महाप्राण निराला किसी भी आन्दोलन या विचारधारा से बँधे नहीं थे। इसलिए, यह भी स्वाभाविक है कि कविता कुछ स्तरों पर छायावाद का अतिक्रमण करे।

'राम की शक्तिपूजा' में छायावाद की कई विशेषताएँ देखी जा सकती हैं:—

(I) ऐतिहासिक-पौराणिक कथानक :— छायावाद की एक विशेषता है — इतिहास एवं मिथकों से लगाव। चूँकि, छायावाद नवजागरण के दौर की कविता है, इसलिए, इसमें भी अतीत के प्रति आकर्षण है। भारत के सर्वाधिक लोकप्रिय मिथक राम की कथा पर राम की शक्तिपूजा आधारित है। इस बिन्दु पर यह कविता छायावादी काव्यानुभूति से मेल खाती है।

(II) वैयक्तिकता / निजता का प्रक्षेपण :— कविता के अन्तर्वस्तु में निजता का प्रक्षेपण छायावाद की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। राम की शक्ति पूजा में दिखनेवाला संघर्ष जितना राम का है, उतना ही निराला का भी। राम की पीड़ा, निराशा, किंचित पराजय-भावना, स्वयं निराला की ही है ———

" धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक् साधन जिसके लिये सदा ही किया शोध,
जानकी ! हाय उद्धार, प्रिया का हो न सका।"

(III) प्रकृति :— छायावाद में प्रकृति का चरम सर्जनात्मक प्रयोग हुआ है। यहाँ प्रकृति सौन्दर्यानुभूति से आगे बढ़कर जीवनानुभूति और रचनाभूति का आधार है। RKSP में भी प्रकृति रचना के परिवेश को सर्जनात्मक रूप में लाती है। ऐसा प्रतीत होता है कि कविता एक नाटक है और प्रकृति उसका रंगमंच। राम की आशा और निराशा प्रकृति व्यक्त करती है —

" है अमानिशा, उगलता गगन घन अंधकार,
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन चार,
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अंबुधि विशाल,
भूधर ज्यों ध्यानमग्न केवल जलती मशाल।"

(v) नारी का स्वरूप :- छायावाद में नारी को देवी, माँ, सहचरी, प्राण के रूप में चित्रित किया गया है। देवी, माँ कहने का भाव है कि यहाँ नारी श्रद्धा की पात्र है। सहचरी और प्राण कहने का भाव यह है कि नारी के प्रति प्रेम समर्पणमूलक है न कि भोगमूलक। RKSP में नारी के इसी स्वरूप को दर्शाया गया है। राम सीता की स्मृति से प्रेरणा ग्रहण करते हैं :—

"फूटी स्मिति सीता ध्यान लीन राम के अधर,
फिर विश्व विजय भावना हृदय में आयी भर।"

(vi) स्वतंत्रता :- स्वतंत्रता या मुक्ति छायावाद का आधारभूत मूल्य है, जो मानव-मुक्ति, भाव-मुक्ति, विश्व-मुक्ति के रूप में व्यक्त होता है। RKSP मुक्ति के प्रसंगों से भरा पड़ा है। सीता की मुक्ति प्रकारांतर से नारी-मुक्ति, संस्कृति-मुक्ति, राष्ट्र-मुक्ति ही है।

(vii) अनुभूतिशीलता :- छायावादी कविता मूलतः अनुभूतिप्रधान होती है। RKSP में दुःखात्मक एवं सुखात्मक भाव नाटकीय पद्धति से आते रहते हैं। पूरी कविता परस्परविरोधी भावों से युक्त है।

(viii) कल्पनाशीलता :- RKSP में कई स्थलों पर कल्पना का सहारा लिया गया है। यह रचना रामकथा के मिथक पर आधारित है किन्तु निराला ने अपनी कल्पनाशीलता से इसमें आधुनिक भाव भर दिए हैं। शक्ति की मौलिक कल्पना तो कल्पना की ऊँची उड़ान है ही।

(viii) काव्यरूप :- छायावाद में लम्बी कविता के रूप में के नये काव्य-रूप का विकास हुआ। इसका कारण यह था कि गद्य-विस्फोट के कारण वर्णन, चिंतन तथा घटना-व्यापार पर गद्य का एकाधिकार स्थापित होने लगा। अतः, छायावादी कवि इतिवृत्तात्मक पद्धति से बचते हुए और भाव-घनत्व पर बल देते हुए महाकाव्य की गरिमा को छूने का प्रयास किया। इस प्रयास में कविताएँ मुक्तक कविताओं से लम्बी व महाकाव्यों से छोटी हो गईं, जिन्हें 'लम्बी कविताएँ' कहा गया। 'राम की शक्तिपूजा' भी एक लंबी कविता है, जिसमें भावों की सघनता है, वर्णन नहीं है।

(ix) भाषा :- छायावाद की भाषा में तत्सम शब्दों की प्रचुरता होकर खड़ी बोली सूक्ष्म व सृजनात्मक काव्य भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हुई। RKSP में समासबहुला तत्समी शब्दावली का प्रयोग हुआ है—

" तीक्ष्ण-शर-विधृत-क्षिप्र कर, वेग प्रखर,
शतशेल सम्वरणशील, नील नभ गर्जित स्वर।"

(e) [भाषा] :- खड़ी बोली में [illegible] [illegible] लयात्मकता और [illegible] [illegible] छायावादी कवियों (मुख्य.) [illegible] निराला द्वारा RKSP [illegible] [illegible]